हिन्दी साहित्य परिषद्, कालिन्दी महाविद्यालय

एक दिवसीय राष्ट्रीय व्याख्यानमाला-01

दिनांक 01 अक्टूबर, 2020 को हिन्दी साहित्य परिषद्, कालिन्दी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) की ओर से एकदिवसीय राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन **'हिन्दी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण'** विषय पर किया गया| जिसमें मुख्यवक्ता प्रोफ़ेसर श्रद्धा सिंह (हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)रही|व्याख्यानमालाका प्रारंभ हिन्दी विशेष द्वितीय वर्ष की छात्रा सुश्री दिव्या ने सरस्वती वंदना से किया| साहित्य परिषद् की संयोजिका डॉ.आरती सिंह ने अतिथि सत्कारकिया|मंच संचालनव अतिथि परिचय कार्यक्रम की सह-संयोजिका सुश्री बलजीत कौर नेकिया|साथ में डॉअंजुला बंसल (प्राचार्या, कालिंदी महाविद्यालय), डॉ. मंजु शर्मा (प्रभारी,हिंदी विभाग) तथा विभागीय सदस्यों की उपस्थित गरिमामय रही।प्रोफ़ेसर श्रद्धा सिंहने अपने वक्तव्य की शुरुआत अत्यंतही सरल और सहज भाव से की, जिससे स्नातक की छात्राएँ लाभान्वित हो पाई|प्रो.सिंह ने हिन्दी भाषा का व्याकरण और व्यावहारिक व्याकरण के अंतर को बारीकियों से स्पष्ट की| इसके लिए लिपि, वर्तनी और उच्चारण की ऐतिहासिक (संस्कृत सेहिन्दी) यात्रा की|अपने व्याख्यान में इस बात पर ज़ोरदिया कि,अकसर हिन्दी को क्लिष्ट भाषा कहा जाता है जबकि ऐसा नहीं है| अन्य भाषाओं के व्याकरण में भीदोष मौजूद हैं किन्तु हिन्दी को साज़िश के तहत क्लिष्ट भाषा का दर्ज़ा दिया गया,जबकि यह नदी के समान प्रवाहमान भाषा है| उन्होंने हिन्दी भाषा की 'आत्मा' की रक्षा करते हुए,व्यावहारिक व्याकरण में आए बदलाओं का भी स्वागत किया|इस दौरान छात्राओं और शिक्षकों ने कई सवाल भी किए| जिनका उन्होंने बड़ी सहजता से उत्तर दिए| प्रो.सिंह के व्याख्यान की सबसे बड़ीविशेषता सरल उदाहरणों का प्रयोग रहा| व्याख्यान के अंत में डॉ मंजु शर्माने धन्यवाद ज्ञापित किया|

एक दिवसीय राष्ट्रीय व्याख्यानमाला-02

दिनांक 22 अक्टूबर, 2020 को हिन्दी साहित्य परिषद्, कालिन्दी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) की ओर से एक दिवसीय राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन **'अस्मितामूलक विमर्श'** विषय पर किया गया| जिसमें मुख्यवक्ता प्रोफ़ेसर श्यौराज सिंह बेचैन(विभाग अध्यक्ष हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) रहे| व्याख्यानमाला का प्रारंभ सहित्य परिषद् की संयोजिका डॉ.आरती सिंह ने अतिथि सत्कार से किया| मंच संचालनव अतिथि परिचय कार्यक्रम की सह-संयोजिका सुश्री बलजीत कौर ने किया| साथ में डॉअंजुला बंसल (प्राचार्या, कालिंदी महाविद्यालय), डॉ. मंजु शर्मा (प्रभारी,हिंदी विभाग) तथा विभागीय सदस्यों की उपस्थित गरिमामय रही। प्रोफ़ेसर ने श्यौराजसिंह बेचैन अपनेवक्तव्य की शुरुआत अत्यंतही सरल और सहज भाव से की, जिससे स्नातक की छात्राएँ लाभान्वित हो पाई| प्रो.सिंह ने अस्मितामूलक विमर्श की अवधारण स्पष्ट किया| इसके लिए वे अपने अनुभवात्मक प्रसंगों का उल्लेख किया| अपने व्याख्यान में इस बात पर ज़ोर दिया कि, हिन्दी साहित्य तभी लोकतंत्र बनेगा जबवह सभी की वैचरिकी को स्थान देगा| उन्होंने बताया कि शुरूआती दौर में 'दलित विमर्श' को साहित्य मानने से इनकार करदिया गया था| किन्तु विमर्शकारों के अथक प्रयास से मौजूदा वक्त में 'दलित विमर्श' अपनी प्रभावशाली पहचान बना चुका है इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता| इस दौरान छात्राओं और शिक्षकों ने कई सवाल भी किए| जिनका उन्होंने बड़ी सहजता से उत्तर दिए| प्रो.सिंह के व्याख्यान की सबसे बड़ीविशेषता जीवनानुभव के सरल उदाहरणों का रहा| व्याख्यान के अंत में डॉमंजु शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया|